मध्य प्रदेश के छह विरासत स्थल यूनेस्को की संभावित सूची में शामिल

चर्चा में क्यों?

हाल ही में मध्य प्रदेश के छह विरासत स्थलों को **संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को)** की अस्थायी सूची में शामिल किया गया है।

मुख्य बिंदु:

- नई सूची में शामिल स्थलों में **ग्वालियर का किला, धमनार का ऐतिहासिक समूह, भोजेश्वर महादेव मंदिर, चंबल घाटी के रॉक कला स्थल, खूनी भंडारा, बुरहानपुर और रामनगर, मंडला का भगवान स्मारक** शामिल हैं।
- वर्ष 2010 में भूमिगत जल संरचना **खूनी भंडारा को यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची** में शामिल करने के प्रयास शुरू किये गए।
- वर्ष 2013 में यूनेस्को की एक टीम इस संरचना को देखने आई थी। उनके द्वारा बताई गई सभी कमियों को दूर किया गया।
- अब ज़िला प्रशासन, नगर निगम प्रशासन और मध्य प्रदेश सरकार ने यहाँ सुविधाएँ मुहैया कराने के लिये कार्ययोजना तैयार की है।

खूनी भंडारा

- यह एक भूमिगत जल प्रबंधन प्रणाली है जिसमें **मध्य प्रदेश के बुरहानपुर ज़िले** के ऐतिहासिक शहर बुरहानपुर में निर्मित **आठ वॉटरवर्क्स** शामिल हैं।
- बुरहानपुर की ये मुगलकालीन जल संरचनाएँ भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण **ऐतिहासिक जल प्रणालियों** में से एक हैं।
- बुरहानपुर में इन जल प्रणालियों का निर्माण **औरंगाबाद और बीदर के मौजूदा ऐतिहासिक शहरों** की तरह ही फारसी कनात दृष्टिकोण पर वर्ष 1615 में किया गया था।

ग्वालियर किला

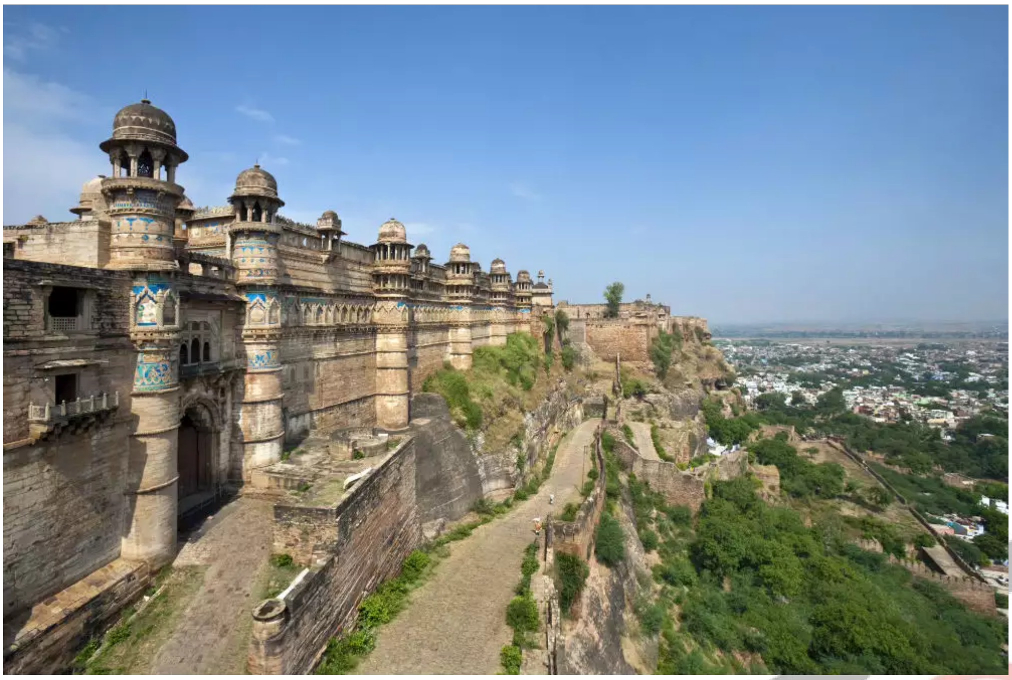

- ग्वालियर किला मध्य प्रदेश के ग्वालियर के पास एक पहाड़ी किला है। यह किला कम-से-कम 10वीं शताब्दी से अस्तित्व में है और किले में पाए गए शिलालेखों तथा स्मारकों से संकेत मिलता है कि **यह 6वीं शताब्दी की शुरुआत में अस्तित्व में रहा होगा।**
- इस पर **हूणों, गुर्जर-प्रतिहारों, कच्छपघातों, तोमरों, लोदियों और मुगलों** जैसे कई राजवंशों का कब्ज़ा रहा है।
- किले में कई मंदिर और संरचनाएँ हैं।

धमनार का ऐतिहासिक समूह

- धमनार की गुफाएँ मध्य प्रदेश के मंदसौर ज़िले के धमनार गाँव के पास एक पहाड़ी पर स्थित हैं।
- इस **रॉक कट साइट** में लेटराइट पहाड़ी में खुदी हुई विभिन्न आकार की कुल 51 गुफाएँ हैं।
- पहाड़ी में संरचनाओं के दो समूह हैं, **बौद्ध गुफाओं की शृंखला और हिंदू मंदिर परिसर जिसे धर्मराजेश्वर मंदिर** के नाम से जाना जाता है, जिसे धर्मनाथ मंदिर भी कहा जाता है।

भोजेश्वर महादेव मंदरि

- भोजेश्वर मंदरि मध्य प्रदेश के भोजपुर **गाँव में एक अधूरा हदि मंदरि है।**
- माना जाता है कि मंदरि का नर्माण 11वीं शताब्दी में परमार राजा भोज के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ था।
- नर्माण को **अज्ञात कारणों से छोड़ दयिा गया था,** आस-पास की चट्टानों पर वास्तुशल्पि योजनाएँ उकेरी गई थीं।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/six-madhya-pradesh-heritage-stes-included-in-tentative-unesco-list